भारवि का काव्य सौंदर्य

एम्.ए – IV सेमेस्टर

डॉ उमा शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
एन.ए.एस (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

किरातार्जुनीयम् – भारविकृत

प्र०=1 भारवि का काव्य-सौन्दर्य

1) **अर्थगाम्भीर्य** – महाकवि भारवि निःसंदेह एक उच्चकोटि के कवि है उनका एकमात्र काव्य 'किरातार्जुनीयम्' संस्कृत के पाँच महाकाव्यों में एक है।

कलावादी कवियों में माघ ने शब्द और अर्थ की गंभीरता पर ध्यान दिया है, नैषधीयचरित के रचयिता श्री हर्ष ने प्रौढोक्ति तथा पदलालित्य पर व महाकवि भारवि ने अर्थ गौरव के ऊपर विशेष ध्यान दिया है उनकी इसी विशेषता के कारण **'भारवेरर्थगौरवम्'** उक्ति प्रसिद्ध है भारवि थोड़े से शब्दों में बहुत सी बाते कहने में कुशल है।

उदाहरण के लिए निम्नलिखित पद्य में एक व्यापक अर्थ का थोड़े से शब्दों में सन्निवेश कर दिया गया है।

सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः समानमानान् सुहृदश्च बन्धुभिः
स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्

भारवि की कविता से ऐसा अनूठा रस निकलता है जो अपने ढंग का अनूठा ही है उनकी कविता की इसी विशेषता को मल्लिनाथ ने **'नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः'** कहकर व्यक्त किया है।

2. **संवाद योजना :-** द्रौपदी द्वारा कहे गए बौखलाहट तथा झुंझलाहट को भी कवि ने बड़े ही सुंदर संवाद में अभिव्यक्त किया है

इमामहं वेद न तावकीं धियं विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः

3) **अलंकार योजना -** महाकाव्यों के इतिहास में भारवि अलंकृत काव्यशैली के प्रवर्तक माने जाते हैं अपनी उपमा के कारण इन्हें **आतपत्र-भारवि** की उपाधि मिली है

अर्थालङ्कार का सौन्दर्य व साथ ही रूपक, उत्प्रेक्षा, निदर्शना व यमक का भी सुंदर प्रयोग है कुछ महत्वपूर्ण सूक्तियाँ -

1) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
2) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः
3) गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया

4) **भाषा - शैली -** कविता प्रसादगुणयुक्त, रीति वैदर्भी

काकु - वक्रोक्ति तथा निर्वचन का प्रयोग भी भारवि ने स्थान - पर किया है निर्वचन का उदाहरण है

स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्

रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्

5) **छंद योजना -** भारवि विविध छंदों के प्रयोग में कुशल हैं उनके वंशस्थ छंद की प्रशंसा क्षेमेन्द्र ने की है। इसके अतिरिक्त इन्होंने उपजाति, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, स्वागता, मालिनी, पुष्पिताग्रा